न्-ारा-प्-ारा, वन्डरफुल, स्नेह और सुखभरा अवतरण – शिव ज-ान्ती

9-3-94

व्रत, जागरण और बलि के -ाथार्थ स्वरूप में स्थित कराने वाले शिव भोलानाथ बाबा अपने सालिग्राम बच्चों प्रति बोले–

आज त्रिदेव रचता बाप अपने पूज्-ा सालिग्राम बच्चों से मिलने आ-ो हैं। जैसे बिन्दु ज्-ोति स्वरूप बाप की पूजा होती है, -ादगार मनाते हैं तो बाप के साथ-साथ आप सालिग्राम आत्माओं की भी पूजा होती है। बाप एक त्रिमूर्ति शिव गा-ा और पूजा जाता है और आप सालिग्राम आत्मा-ें अनेक हो। पूजा दोनों की होती है। क-ोंकि बाप ने सभी बच्चों को अपने समान पूज्-ा बना-ा है। कभी भी सालिग्राम को देखते हो तो क-ा अनुभव करते हो? -ो हम ही हैं–ऐसे लगता है? तो बाप ने बच्चों को समान तो क-ा लेकिन अपने से भी श्रेष्ठ पूज्-ा बना-ा है। बच्चों की पूजा डबल रूप में होती है। बाप की पूजा एक ही शिवलिंग के रूप में होती है। आप बच्चों की सालिग्राम के रूप में भी होती है और देव आत्माओं के रूप में भी होती है। बाप से भी ज्-ादा डबल रूप के पूजा के अधिकारी आत्मा-ें आप हो। जैसे डबल विदेशी कहलाते हो तो डबल पूज्-ा भी हो। डबल ताजधारी भी आप बनते हो। निराकार बाप नहीं बनते। कहाँ-कहाँ भक्त लोग शिव की प्रतिमा को ताज डाल देते हैं। क-ोंकि ताजधारी बना-ा है इसलि-ो कहाँ-कहाँ ताज दिखा देते हैं। लेकिन बाप कभी भी रत्न जड़ित सोने-चाँदी के ताजधारी नहीं बनते। क-ोंकि ताज धारण होता है प्रैक्टिकल में, मस्तक में। तो निराकार बाप को मस्तक है क-ा? शरीर ही नहीं है तो ताज क-ा धारण करेंगे! लेकिन स्नेह के कारण ताज दिखा देते हैं। तो बाप ने बच्चों को अपने से भी आगे रखा है। इतनी खुशी और इतनी श्रेष्ठ स्मृति रहती है? बापदादा को अपनी ज-ान्ती मनाने की खुशी नहीं है लेकिन आप सबकी भी ज-ान्ती है, इसलि-ो बच्चों की ज-ान्ती की खुशी है। क-ोंकि बाप अकेला कुछ नहीं कर सकता और आप भी अकेले कुछ नहीं कर सकते। चाहे कहीं-कहीं कोई-कोई बच्चों को थोड़ा आ जाता है कि मैं ही करने वाला हूँ लेकिन सिवाए बाप के सफ़लता नहीं मिलती। तो न बाप अकेला

कुछ कर सकता, न बच्चे अकेले कुछ कर सकते हैं। अगर बाप बच्चों से मिलन मनाने भी साकार में चाहे वा आकार में भी चाहे तो ब्रह्मा का आधार लेना ही पड़ता है। ब्रह्मा के बिना भी कुछ कर नहीं सकता। माध्-ाम के बिना साकार मिलन नहीं मना सकता। तो कितना प्-ाार बाप का बच्चों से है और बच्चों का बाप से है! एक-दो के बिना कुछ नहीं कर सकते। अगर बाप को किनारा कि-ाा, साथ नहीं रखा तो अकेले कुछ कर सकते हो। बाप कर सकता है? बाप भी नहीं कर सकता। तो -ो बाप और बच्चों का साथ-साथ दिव्-ा जन्म लेना, साथ-साथ विश्व परिवर्तन करना और साथ-साथ अपने स्वीट होम में जाना--ो ड्रामा की अविनाशी नूँध है। इसको कोई बदल नहीं सकता। तो -ाह नूँध अच्छी है ना, प्-ाारी लगती है ना? तो आज सब बाप का बर्थ डे मनाने आ-ो हो -ाा अपना? बाप कहेंगे आपका और बच्चे बाप को कहेंगे कि आपका।

-ो दिव्-ा अवतरण, जिसको शिव ज-ान्ती वा शिवरात्रि कहते हैं, कितना आत्माओं के लि-ो स्नेहभरा, सुखभरा अवतरण है। सत-ाुग में भी ऐसा बर्थ डे नहीं मना-ोंगे। आत्मा-ों, आत्माओं का बर्थ डे मना-ोंगी लेकिन इस सम-ा आत्मा-ों परम आत्मा का बर्थ डे मनाती हैं। सारे कल्प में ऐसा न्-ाारा और प्-ाारा, वन्डरफुल बर्थ डे, जो एक ही सम-ा पर बाप का भी हो और बच्चों का भी हो – ऐसा कभी होता है क-ाा? अगर तारीख एक भी होगी तो वर्ष का -ाा मास का -ाा डेट का अन्तर होगा। लेकिन -ो अवतरण दिवस कितना वन्डरफुल है जो बाप और बच्चों का साथ-साथ है।

इस -ादगार दिवस पर विशेष भक्त लोग भी दो विशेषताओं से -ो दिवस मनाते हैं। दो विशेषता-ों कौन-सी हैं? एक–विशेष व्रत धारण करते हैं और दूसरा–स्व-ं को समर्पित न करते हुए और किसी को बलि चढ़ाते हैं। तो बलि चढ़ाना और व्रत धारण करना -ो दोनों विशेषताएं इस दिवस की हैं। अनेक प्रकार के व्रत धारण करते हैं। चाहे कोई भोजन का करते हैं, कोई जागरण का करते हैं, कोई दूर-दूर से पैदल करते हुए चलने का करते, कितना भी थक जा-ों लेकिन व्रत अपना पूरा करते हैं। चाहे कितने दिन भी लग जा-ों, कितना सम-ा भी लग जा-ो लेकिन व्रत नहीं छोड़ते। तो -ाह -ादगार किससे कॉपी की? आपका है ब्राह्मण जीवन का व्रत और भक्तों का है एक दिन का व्रत। आपने भी जब ब्राह्मण जन्म

वा दिव्-ा बर्थ लि-ाा तो क-ाा व्रत लि-ाा? सदा अज्ञान नींद से जागरण का व्रत लि-ाा ना कि थोड़ा-थोड़ा नींद करेंगे -ाह व्रत लि-ाा? वा थोड़े-थोड़े झुटके खा लेंगे ऐसे तो नहीं कि-ाा? तो आप सभी ने भी शिव ज-ान्ती वा दिव्-ा बर्थ डे पर जागरण का व्रत लि-ाा इसलि-ो भक्त भी -ादगार रूप में जागरण करते हैं। और आप सबने भी शुद्ध भोजन का व्रत लि-ाा। इसलिए भक्त लोग भी, कुछ भी हो जा-ो, चाहे बीमार भी हो जाते हैं तो भी अन्न के व्रत को तोड़ेंगे नहीं। तो आप सब भी कोई भी मन के आगे, तन के आगे, परिस्थिति-ाँ आ जा-ें तो व्रत तोड़ते हो क-ाा? कभी कुछ मिक्स खा लि-ाा–ऐसे करते हो क-ाा? कोई देखता तो है नहीं, चलो खा लि-ाा, अपना नि-ाम पक्का रखते हो ना कि कच्चे हो? कभी-कभी देखकरके थोड़ी दिल होती है? एक ही जैसा खाना खाते-खाते कभी दूसरा भी खाने की दिल होती है? अच्छा, इसमें अमेरिका, आस्ट्रेलि-ाा, -ारोप, एशि-ाा वा रशि-ाा सभी पक्के हो ना -ाा थोड़ा-थोड़ा कच्चे हो?

तो डबल विदेशी सभी पास हो ग-ो और भारत वाले तो पास हैं ही ना! भारत वालों को फिर भी सहज है। डबल विदेशि-ों को इसमें डबल मेहनत भी है। लेकिन पास हो इसकी मुबारक। तो एक बर्थ डे की मुबारक, दूसरी पास होने की मुबारक और तीसरी कभी भी हलचल में न आए सदा अचल रहना, इसमें पास हो? इसमें कह देते हैं–क-ाा करें–सम-टाइम। आज बापदादा ने डबल विदेशि-ों के लि-ो बहुत रमणीक भाषा इमर्ज की, क-ोंकि डबल विदेशी एंज्वा-ाज्-ादा पसन्द करते हैं ना। कुछ होना चाहि-ो, कुछ एंज्वा-ा हो, ऐसे शान्त-शान्त क-ाा रहें। तो बापदादा शिवरात्रि पर इन शब्दों का सभी से दृढ़ व्रत कराते हैं। व्रत लेने के लि-ो तै-ाार हो? -ाा जब सुनेंगे तब कहेंगे कि -ो तो थोड़ा, थोड़ा मुश्किल है। पहले तो 'मुश्किल' शब्द संकल्प में भी नहीं ला-ोंगे--ाह व्रत लेने के लि-ो तै-ाार हो? तो बापदादा ने देखा कि जब तक संकल्प में दृढ़ता नहीं तब तक सफ़लता नहीं होती। संकल्प होता है लेकिन दृढ़ नहीं होता तो कमज़ोरी आती है। बहुत करके कमज़ोरी के -ाही शब्द कहते हैं कि क-ाा करें – व्हाट। तो अभी व्हाट नहीं कहना लेकिन व्हाट के बजा-ा क-ाा कहेंगे? फ्ला-ा (उड़ना)। तो जब भी व्हाट शब्द आ-ो तो ब्राह्मण डिक्शनरी में व्हाट के बजाए फ्ला-ा शब्द है। दूसरा शब्द क-ाा बोलते हो? व्हाई (क-ों), तो व्हाई को क-ाा करेंगे? बॉ-ा-बॉ-ा। सदा के लि-ो

बॉ-ा-बॉ-ा करेंगे -ाा थोड़े टाइम के लि-ो? और तीसरा शब्द क्-ाा बोलते हैं? हाउ। तो हाउ ([illegible]) नहीं, नो ([illegible]), जानते हैं, कैसे नहीं, नो अर्थात् जानने वाले। जब त्रिकालदर्शी बन जा-ोंगे, जानने वाले बन जा-ोंगे तो फिर हाउ कहेंगे क्-ाा? हाउ कहना माना हौव्वा आना। तो हौव्वा अच्छा लगता है क्-ाा? इसीलि-ो -ाही शब्द हैं जो कमज़ोरी लाते हैं। -ाही शब्द हैं जो व्-ार्थ संकल्प का गेट खोलते हैं। सोचो, जब भी व्-ार्थ संकल्पों की क्-ाू लगती है तो किस शब्द से लगती है? इन्हीं शब्दों से लगती है ना। -ाा क्-ाों होगा, -ाा क्-ाा वा कैसे होगा। -ो कैसे हुआ! -ो कैसे कहा! -ो क्-ाों कहा! अब क्-ाा करें! ... कैसे करें! तो कमज़ोरी के -ाा व्-ार्थ संकल्पों के गेट -ो शब्द हैं। इसको डिक्शनरी में चेंज कर दो। फिर क्-ाा होगा? आप भी चेंज हो जा-ोंगे ना। तो भक्त लोग आपको ही कॉपी कर रहे हैं। आपकी बेहद की बात है और उन्होंने हद के रूप में -ाादगार रखा है। तो -ाह दृढ़ व्रत रखना--ाही शिव ज-ान्ती वा शिवरात्रि मनाना है। मनाना अर्थात् बनना। ऐसे नहीं, सिर्फ केक काट लि-ाा लाइट जला ली, दीपक जला लि-ाा, तो -ो मनाना नहीं, -ो मनोरंजन भी आवश्-ाक है लेकिन इसके साथ-साथ कुछ काटना है और कुछ जलाना भी है।

एक तरफ़ दीपक वा मोमबत्ती जलाते हो, दूसरा केक काटते हो, तीसरा झण्डा लहराते हो, चौथा-गीत गाते हो, पांचवा-डांस भी करते हो। और क्-ाा करते हो? मीठा बांटते और खाते हो। तो अभी -ो ६ बातें ही करनी पड़ेंगी। पहले तो दृढ़ संकल्प का अपने मन में दीप जलाओ कि अब से दृढ़ता द्वारा सफ़लता को पाना ही है। देखेंगे, पता नहीं, पता नहीं, नहीं। होना ही है, करना ही है, गे शब्द नहीं, है। और दूसरा केक कौन-सा काटेंगे? केक पूरा नहीं खा-ाा जाता, काटकर खा-ाा जाता है। तो क्-ाा काटेंगे? जो भी सम्पन्न बनने में -ाा सम्पूर्ण बनने में कोई भी संकल्प मात्र भी रुकावट हो उसको अब से काट लो, खत्म। और जो कमज़ोरी हो उसके बजा-ा शक्ति धारण करने का केक मुख में डालो। पहले काटो, फिर मुख में खाओ। समझा? झण्डा कौन-सा लहरा-ोंगे? -ो तो -ाादगार के रूप से झण्डा लहराते हैं लेकिन अपने दिल में बाप को हर संकल्प, बोल और कर्म द्वारा सदा प्रत्-ाक्ष करने का झण्डा दिल में लहराओ। कोई भी संकल्प, बोल और कर्म ऐसा नहीं हो जो बाप को प्रत्-ाक्ष करने का नहीं हो। क्-ाोंकि सबके दिल में बाप

के स्नेह के कारण -ाही संकल्प है कि बाप को प्रत्-ाक्ष करना है। तो कैसे करेंगे? सदा अपने संकल्प, बोल और कर्म द्वारा दिल में प्रत्-ाक्ष करने का झण्डा लहराओ और सदा खुश रहने की डांस करते रहो। कभी खुश, कभी उदास--ाह नहीं। जब उदास होते हो तो उस सम-ा भी अपना एक फोटो निकालो। और जब खुश होते हो तो भी फोटो निकालो। फिर दोनों फोटो साथ रखो। फिर देखो अच्छा क-ाा है? मैं -ो हूँ -ाा वो हूँ? तो सदा हर्षित रहने का, खुश रहने का डांस करो। कुछ भी हो जा-ो, कोई कितना भी खुशी चुराने की कोशिश करे। क-ोंकि मा-ाा किसी के द्वारा ही तो करा-ोगी ना। कुछ भी हो जा-ो, कितना भी कोई किसी भी प्रकार से खुशी कम करने -ाा खुशी गुम करने का प्र-ात्न करे लेकिन जब तक जीना है तब तक खुश रहना है। -ाह पक्का व्रत लि-ाा है ना। क-ाा नहीं कर सकते हो, विल पॉवर है ना? तो जिसके पास विल पॉवर है वो क-ाा नहीं कर सकता अगर आप मास्टर सर्वशक्तिमान् नहीं कर सकेंगे तो और कौन करेगा! कोई और पैदा होने वाले हैं -ाा आप ही हो? माला के मणके आपको ही बनना है -ाा औरों का इंतज़ार कर रहे हो? फ़र्स्ट डिवीज़न में आना है ना कि सेकण्ड भी चलेगा? तो -ाह दृढ़ संकल्प अर्थात् व्रत लो कि जब तक जीना है तब तक खुश रहना है। और जो खुश रहेगा वो खुशी की मिठाई बांटता रहेगा। उस मिठाई से तो सिर्फ मुख मीठा होता है और इससे मन, तन, दिल सब खुश हो जाते हैं। तो -ाह मीठा बांटना है। और गीत सदा क-ाा गाते हो? मीठा बाबा, प्-ाारा बाबा, मेरा बाबा--ाही गीत गाते हो ना सदा -ाह गीत ऑटोमेटिक बजता रहे। ऐसे नहीं, सेल खत्म हो जा-ो तो गीत खत्म हो जा-ो। बैटरी स्लो हो जा-ो। नहीं। जब बैटरी स्लो होती है, तो पता है कैसे गीत गाते हो? सबको अनुभव तो है ना। फिर क-ाा होता है? मेरा है तो बाबा, तो तो आ जाता है। सिर्फ मेरा बाबा नहीं कहेंगे, मेरा है तो बाबा। मिक्स हो ग-ाा ना। बैटरी स्लो होती है तो आवाज़ स्लो हो जाता है और उसमें तो तो शब्द एड हो जाता है। मेरा बाबा फ़लक से नहीं, मेरा है तो बाबा।

तो शिवरात्रि मनाना अर्थात् -ो दृढ़ व्रत लेना। ऐसी शिवरात्रि मनाई ना? -ाा सोचकर पीछे जवाब देंगे! अच्छा, बहुत होशि-ाार हो, अभी-अभी सोच लि-ाा। डबल विदेशी हो इसीलि-ो डबल होशि-ाार हो। अच्छा!

डबल विदेशि-ों ने मधुबन में कौन-सी विशेष सेवा की? क-ाा कि-ाा? ब्रह्मा

बाबा को प्रत्-ाक्ष कि-ाा। स्टेम्प का फंक्शन मना-ाा। विशेष -ोग भी लगा-ाा ना। पॉवरफुल -ोग लगा-ाा तो विघ्न विनाशक हो ग-ो ना। चाहे मधुबन निवासि-ों के -ोग ने, चाहे डबल विदेशि-ों के -ोग ने, चाहे चारों ओर ब्राह्मण बच्चों के -ोग ने कमाल की ना। क-ोंकि चारों ओर सबका -ाह एक ही संकल्प था कि ब्रह्मा बाप को प्रत्-ाक्ष करना ही है। फिर कोई ने भाग-दौड़ की सेवा की, कोई ने मंसा सेवा की, कोई ने वाचा सेवा की, लेकिन जिन्होंने जो भी -ोग-ुक्त होकर सेवा की ऐसे सेवाधारि-ों को सफ़लता की मुबारक। कितनी खुशी हुई! क-ोंकि ब्रह्मा बाप से सबका दिल का अति सूक्ष्म प्-ाार है। सभी ने ब्रह्मा बाप को देखा है -ाा जानते हो? क-ाा कहेंगे–देखा है -ाा जाना है? जो कहते हैं हमने देखा है वह हाथ उठाओ। जो कहते हैं जाना तो है लेकिन अभी देखना है वो हाथ उठाओ। (थोड़े लोगों ने उठा-ाा) अच्छा, अनुभव कि-ाा है? ब्रह्मा हमारा बाप है -ाह अनुभव कि-ाा है? क-ोंकि अनुभव भी एक आंख है, जैसे स्थूल आंखों से देखा जाता है तो सबसे बड़ी आंख है अनुभव। अनुभव की आंख से देखा तो भी देखा कहेंगे। अगर अनुभव भी नहीं कि-ाा और अव्-ाक्त रूप से, अव्-ाक्त स्थिति द्वारा देखा नहीं तो फिर अपना नाम दादि-ों को नोट कराना तो वो अनुभव करा देंगी। रह नहीं जाना। क-ोंकि दूसरों को स्टैम्प द्वारा ब्रह्मा बाप का अनुभव करा रहे हो और खुद नहीं करो तो अच्छा नहीं है ना। इसलि-ो जब ब्रह्मा बाप के चित्र के आगे बैठते हो तो चित्र से चैतन्-ाता के मिलन की, अनुभव की अनुभूति नहीं होती है? रूहरिहान का रेसपॉन्स नहीं मिलता है? मिलता है ना। तो बाप है तभी तो सुनता है और देता है। फिर भी इस अनुभव से वंचित नहीं रह जाना। समझा? तो सभी ने जो सेवा की, विशेष भारतवासि-ों ने ज्-ाादा सेवा का चांस लि-ाा तो बापदादा नाम नहीं लेते हैं लेकिन सभी अपने सेवा के रिटर्न में नाम सहित मुबारक स्वीकार करें। डबल विदेशि-ों को भी सेवा का चांस मिल ग-ाा। अच्छा लगा ना! नाच रहे थे ना! अच्छा!

चारों ओर के ब्राह्मण जन्म के दिव्-ा जन्म के अधिकारी आत्माओं को, सदा बाप और आप साथ-साथ रहने वाले समीप आत्माओं को, सदा डबल पूज्-ा स्वरूप के स्मृति में रहने वाले समर्थ आत्माओं को, सदा दृढ़ संकल्प वा दृढ़ व्रत को निभाने वाले सफ़लता के अधिकारी आत्माओं को, सदा खुश रहने वाले और

औरों को भी खुश करने वाले खुशनसीब बच्चों को, त्रिदेव रचता बाप की और ब्रह्मा बाप की विशेष बर्थ डे की मुबारक भी हो और -ाद-प्-ार भी। साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को नमस्ते।

दादि-ों से अव्-ाक्त बापदादा की मुलाकात

(दादी जी ने ब्रह्मा बाबा की स्टेम्प का एलबम बापदादा को दिखा-ा)

सबके बुद्धि-ों को टच कि-ा है। सबके पुरुषार्थ और सबके श्रेष्ठ संकल्प ने विज-ा प्राप्त करा ली। सफ़लता अधिकार है। पुरुषार्थ करना भी ड्रामा में नूँध है और सफ़लता प्राप्त होना भी निश्चित है। सिर्फ निश्च-ा को देखने के लि-ो बीच-बीच में हलचल होती है। तो अनुभव कि-ा, -ोग के प्र-ोग से सहज हो ग-ा ना। सिर्फ पुरुषार्थ से नहीं, पुरुषार्थ में ज्-ादा लग जाते, -ोग का प्र-ोग कम करते तो सफ़लता थोड़ी दूर हो जाती है। पुरुषार्थ और -ोग के प्र-ोग से सबकी वृत्ति-ों को परिवर्तन करना--ो साथ-साथ रहता है तो सफ़लता समीप आती है। तो -ोग के प्र-ोग का -ाह भी अनुभव देख लि-ा। एक दृढ़ निश्च-ा और दूसरा प्र-ोग द्वारा किसी की भी बुद्धि को परिवर्तन कर सकते हैं लेकिन इतना पॉवरफुल -ोग हो। -ाह संगठन के प्र-ोग ने सफ़लता प्रत्-ाक्ष रूप में दिखाई। हिस्ट्री में देखो, आदि से सेवा की हिस्ट्री में जब भी कोई हलचल हुई है तो सफ़लता -ोग के प्र-ोग की विशेषता से ही हुई है। पुरुषार्थ निमित्त बनता है, पुरुषार्थ धरनी बनाता है, वो भी ज़रूरी है। लेकिन सफ़लता का बीज उत्पन्न होने का साधन, बाहर आने का साधन फिर भी -ोग का प्र-ोग ही रहा। -ाह सबको अनुभव है ना। धरनी को बनाना भी ज़रूरी है लेकिन बीज से फल प्रत्-ाक्षरूप में आ-ो उसके लि-ो बैलेन्स चाहि-ो। बैलेन्स में ज़रा भी, ५%, १०% भी कमी पड़ती है तो फ़र्क हो जाता है। लेकिन सभी ने उमंग-उत्साह से सह-ोग दि-ा और सफ़लता प्राप्त की। तो बापदादा सभी बच्चों को सफ़लता की मुबारक देते हैं। अच्छा!

* *

* * ** * *

* *

अव-ाक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात
डबल विदेशी भाई बहिनों से

ग्रुप नं. १

स्व-ां और सम-ा पर भरोसा नहीं-इसलिए दृढ़ संकल्प से कमज़ोरि-ाों को निकाल दो

सभी अपने को विश्व सेवाधारी अनुभव करते हो? विश्व सेवाधारी वा विश्व कल्-ााणकारी वही बन सकता है जिसके पास सर्वशक्ति-ाों का ख़ज़ाना सम्पन्न है। तो सर्वशक्ति-ाों का स्टॉक जमा है? सर्वशक्ति-ााँ हैं वा कोई शक्ति है, कोई नहीं है? कभी-कभी कोई कम हो जाती है? सदा अपने आपको चेक करो कि सर्वशक्ति-ाां हैं वा कोई शक्ति की कमी है? अगर कमी है तो उसके कारण को सोचो। क्-ाोंकि कारण को समझेंगे तो निवारण कर सकेंगे। क्-ाोंकि -ो मा-ाा का नि-ाम है कि जो कमज़ोरी आपमें होगी उसी कमज़ोरी के द्वारा ही आपको मा-ााजीत बनने नहीं देगी। तो वर्तमान सम-ा भी सम-ा प्रति सम-ा मा-ाा उसी कमज़ोरी का लाभ लेगी और आगे चलकर जब अन्त सम-ा आ-ोगा तो भी वो कमज़ोरी धोखा दे देगी। तो ऐसे नहीं सोचना कि थोड़ी सी कमज़ोरी है, एक ही कमज़ोरी है, बाकी तो बहुत अच्छा हूँ, अच्छी हूँ! एक कमज़ोरी भी धोखा दे देगी। इसलि-ो कोई भी कमज़ोरी अपने अन्दर रहने नहीं दो। अगर स्व-ां नहीं मिटा सकते हो तो कोई का सह-ाोग लो, जो शक्तिशाली आत्मा-ों हैं, उनका सह-ाोग लो। विशेष -ाोग का प्र-ाोग करो। किसी भी विधि से कमज़ोरी को मिटाना ही है—-ाह दृढ़ संकल्प करो। -ाह भी नहीं सोचो कि आगे चलकर हो जा-ोगा। नहीं, अभी से निकाल दो। क्-ाोंकि स्व-ां पर और सम-ा पर कोई भरोसा नहीं है। ऐसे नहीं सोचो कि आगे चलकर -ो करेंगे, हो जा-ोगा। नहीं। आपका सलोगन है 'अब नहीं तो कब नहीं' तो जो करना है वो अभी करना है। क्-ाोंकि बाप सम्पन्न है और आपका बाप से प्-ाार है तो बाप जैसा बनना ही प्-ाार का प्रैक्टिकल स्वरूप है। जितना बाप से बहुत-बहुत प्-ाार है इतना ही पुरुषार्थ से भी बहुत-बहुत प्-ाार है? जितना बाप से प्-ाार के लि-ो फ़लक से कहते हो कि १००% से भी ज्-ाादा प्-ाार है, ऐसे पुरुषार्थ के लि-ो भी कहो। सोचेंगे, करेंगे.. नहीं। सब कमज़ोरि-ाां खत्म। गें, गें नहीं। शिवरात्रि मनाने आ-ो हो तो कुछ तो बलि चढ़ेंगे ना। बापदादा सभी

बच्चों को सम्पन्न देखना चाहते हैं। बाप का प्-ार है इसलिए बच्चों की कमी अच्छी नहीं लगती। तो क-ा -ाद रखेंगे कि सदा सम्पन्न, सम्पूर्ण रहना ही है कि थोड़ी-थोड़ी कम्पलेन करते रहेंगे? कम्पलीट! कम्पलेन खत्म। सम्पन्न बनना ही मनाना है।

ग्रुप नं. २

वेस्ट को बेस्ट बनाना अर्थात् होलीहंस बनना

भी अपने को सदा होली हंस अनुभव करते हो? होली हंस का अर्थ है संकल्प, बोल और कर्म जो व्-ार्थ होता है उसको समर्थ में बदलना। क-ोंकि व्-ार्थ जैसे पत्थर होता है, पत्थर की वैल्-ाु नहीं, रत्न की वैल्-ाु होती है। तो व्-ार्थ को समाप्त करना अर्थात् होली हंस बनना। तो व्-ार्थ आता है? होली हंस फ़ौरन परख लेता है कि -ो काम की चीज़ नहीं है, -ो काम की है। तो आप होली हंस हो ना। तो व्-ार्थ समाप्त हुआ? क-ोंकि अभी नॉलेजफुल बने हो कि अगर अभी संकल्प, बोल -ाा कर्म व्-ार्थ गंवाते हैं तो सारे कल्प के लि-ो अपने जमा के खाते में कमी हो जाती है। जानते हो ना, नॉलेजफुल हो? तो जानते हुए फिर व्-ार्थ क-ों करते हो? चाहते नहीं हैं लेकिन हो जाता है–ऐसे कहेंगे? जो समझते हैं अभी भी हो सकता है वो हाथ उठाओ। आप हो कौन? (राज-ोगी) राज-ोगी का अर्थ क-ा है? राजा हो ना, तो मन को कन्ट्रोल नहीं कर सकते! किंग में तो रुलिंग पॉवर होती है ना! तो आप में रुलिंग पॉवर नहीं है? अमृतवेले और फिर सारे दिन में बीच-बीच में अपना आक्-ाुपेशन -ाद करो–मैं कौन हूँ? क-ोंकि काम करते-करते -ाह स्मृति मर्ज हो जाती है कि मैं राज-ोगी हूँ। इसलि-ो इमर्ज करो। -ो नि-ाम बनाओ। ऐसे नहीं समझो कि हम तो हैं ही राज-ोगी। लेकिन राज-ोगी की सीट पर सेट होकर रहो। नहीं तो चलते-चलते कर्म में बिज़ी होने के कारण -ोग भूल जाता है, सिर्फ कर्म ही रह जाता है। लेकिन आप कर्म-ोगी कम्बाइन्ड हो। -ोगी सदा ही रुलिंग पॉवर, कन्ट्रोलिंग पॉवर में रहें। फिर राज-ोगी डबल पॉवर वाले कभी भी व्-ार्थ सोच नहीं सकते। तो अभी कभी नहीं कहना, सोचना भी नहीं कि राज-ोगी वेस्ट कर सकते हैं। तो -ो कौन-सा ग्रुप है? बेस्ट ग्रुप। बापदादा को

भी बेस्ट ग्रुप अति प्-ारा है क-ों? ६३ जन्म बहुत वेस्ट कि-ा ना, अभी -ह छोटा-सा जन्म बेस्ट ही बेस्ट। अच्छा!

ग्रुप नं. ३

प्-ोरिटी की रॉ-ाल्टी ही ब्राह्मण जीवन की विशेषता है

सभी ब्राह्मण जीवन की विशेषता वा फ़ाउन्डेशन को जानते हो? क-ा है? (प्-ोरिटी) -ह पक्का है कि प्-ोरिटी ही फ़ाउन्डेशन है? तो सभी पक्के ब्राह्मण हैं ना! प्-ोरिटी की रा-ॅल्टी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। जैसे कोई रॉ-ाल फैमिली का बच्चा होगा तो उसके चेहरे से चलन से मालूम पड़ता है कि -ह कोई रा-ॅल कुल का है। ऐसे ब्राह्मण जीवन की परख -ह प्-ोरिटी की झलक से ही होती है। और चेहरे वा चलन से प्-ोरिटी की झलक तब दिखाई देगी जब सदा संकल्प में भी प्-ोरिटी हो। संकल्प में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो। तो ऐसे हैं -ा कभी संकल्प में थोड़ा सा प्रभाव पड़ता है? क-ोंकि पवित्रता सिर्फ ब्रह्मच-र्ा व्रत नहीं। लेकिन प्-ोरिटी अर्थात् किसी भी विकार अर्थात् अशुद्धि का प्रभाव न हो। तो फ़ाउन्डेशन पक्का है -ा कभी कभी क्रोध को छुट्टी दे देते हो? बाल बच्चा आ जाता -ा अंश और वंश सब खत्म। क-ा समझते हो? माताओं में मोह आता है? बॉडीकॉन्शसनेस की अटैचमेंट है? कोई विकार का अंश मात्र भी नहीं। क-ोंकि बड़ों से तो मोह वा लगाव जल्दी निकल जाता है, लेकिन छोटों-छोटों से थोड़ा ज-ादा होता है। जैसे लौकिक संबंध में भी बच्चों से इतना प्-ार नहीं होगा जितना पोत्रों और धोत्रों से होता है। ऐसे विकारों के भी ग्रेट चिल्ड्रेन से प्-ार तो नहीं है? फ़ाउन्डेशन प्-ोरिटी है इसलिए इस फाडन्डेशन के ऊपर सदा ही अटेन्शन रहे। सबका लक्ष्-ा बहुत अच्छा है। तो जैसे लक्ष्-ा है वैसे ही लक्षण स्व-ं को भी अनुभव हों और दूसरों को भी अनुभव हों। क-ोंकि अनेक अपवित्र आत्माओं के बीच में आप पवित्र आत्मा-ें बहुत थोड़े हो। तो थोड़ी सी पवित्र आत्माओं को अपवित्रता को खत्म करना है। तो कितनी पावर चाहिए! तो सदा चेक करो कि अपवित्रता का अंश मात्र भी न हो। क-ोंकि आपके जड़ चित्रों का भी सदा ही निर्विकारी कहकर गा-ान करते हैं। -ह किसकी महिमा करते हैं?

आपकी है -ाा भारतवासि-ों की है? तो प्रैक्टिकल चेतन में बने हैं तब तो महिमा हो रही है। -ाह पक्का निश्च-ा है ना कि -ाह हम ही हैं! तो ब्राह्मण अर्थात् प्-ोरिटी की रॉ-ाल्टी में रहने वाले। प्-ोरिटी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। हिम्मत रखकर आगे बढ़ रहे हो और और भी आगे से आगे बढ़ना ही है। उड़ती कला वाले हो ना कि चलने वाली कला में हो? कभी नीचे ऊपर होते हो? सदा फाइन है -ाा कभी-कभी फाइन? सम टाइम खत्म हुआ? अभी-रूहरिहान में तो आकर नहीं कहेंगे कि नहीं थोड़ा थोड़ा रह ग-ाा है? नहीं। अभी व्-ाा रूहरिहान करेंगे? ओ.के.। ओ.के.कहने से ही देखो चेहरे मुस्कराते हैं। और जब समटाइम कहते हो तो आंखे नीचे हो जाती हैं। सदैव -ाह स्मृति में रखो कि अब नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे। अभी बनना है। पुरुषार्थ करेंगे, देखेंगे, नहीं। होना ही है, तो इसको कहा जाता है निश्च-ा बुद्धि विज-ाी। तो कौन हो? प्-ोरिटी की रॉ-ाल्टी में रहने वाले।

अच्छा, सभी स्व-ं को फ़र्स्ट डिवीज़न वाली आत्मा-ें अनुभव करते हो? सदा फ़र्स्ट रहना है और सदा ही औरों को भी फ़ास्ट गति से आगे बढ़ाना है।

ग्रुप नं. ४

सन्तुष्टमणि बनने के लिए अपने अनादि और आदि स्वरूप की स्मृति में रहो

सदा अपने अनादि और आदि स्वरूप को सहज स्मृति में ला सकते हो? अनादि रूप है निराकार ज्-ोति स्वरूप आत्मा और आदि स्वरूप है देव आत्मा। तो दोनों स्वरूप सदा स्मृति में रहते हैं और सहज स्मृति रहती है? जितना देहभान में रहना सहज है, उतना ही देही अभिमानी स्थिति में स्थित होना भी सहज है? बॉडी कॉन्शस में कितने टाइम में आ जाते हैं? टाइम लगता है? न मेहनत लगती है, न टाइम लगता है। क्-ोंकि अभ्-ास है। तो ऐसे ही जब अब नॉलेज मिली तो नॉलेज की लाइट, नॉलेज की माइट के आधार पर अभी सोल कॉन्शसनेस की स्मृति का ऐसा सहज अनुभव हो। -ाह भी अभ्-ास करते-करते सहज हो ग-ाा है ना। -ाा ६३ जन्म का अभ्-ास शक्तिशाली है? विस्मृति के ६३ जन्म और स्मृति का -ाह एक छोटा-सा जन्म भी ६३ जन्मों से शक्तिशाली है।

क-ोंकि इस सम-ा नॉलेज की लिफ्ट मिली हुई है तो लिफ्ट में पहुँचना सहज होता है। लिफ्ट से सेकण्ड में पहुँच जाते हो ना कि उतरते चढ़ते हो? सेकण्ड में स्मृति आई और अनुभव में टिक जा-ें। क-ोंकि स्मृति शक्तिशाली है, विस्मृति कमज़ोर करती है। तो शक्तिशाली हो ना? कितनी पॉवर है? फुल है? पॉवर फुल है ना? पॉवर शब्द अलग नहीं कहते, पॉवरफुल कहते हैं। ऐसे बहादुर हो -ाा कभी फ़ेल, कभी फुल! हर कल्प में स्मृति स्वरूप बने हैं, अभी भी बने हैं और हर कल्प में बनते रहेंगे। कितने कल्पों का अभ्-ास है? अनेक बार का अभ्-ास है ना, अनेक बार कि-ा है ना कि नई बात है? बाप का बनना अर्थात् परिवर्तन होना। ब्राह्मण बनना अर्थात् स्मृति स्वरूप बनना। इस अपने अनादि स्वरूप में स्थित होने से स्व-ं भी स्व-ं से सन्तुष्ट रहते और औरों को भी सन्तुष्टता की विशेषता अनुभव कराते हैं। तो सभी सन्तुष्ट मणि-ाँ हो -ाा बनना है? असन्तुष्टता का कारण होता है अप्राप्ति। तो आपको कोई अप्राप्ति है क-ाा? आपका सलोगन क-ाा है? पाना था वो पा लि-ाा। तो पा लि-ाा कि थोड़ा-थोड़ा रह ग-ाा है? क-ोंकि बाप का बनना अर्थात् वर्से का अधिकारी बनना। तो अधिकारी आत्मा-ें हो ना? तो सदा क-ाा गीत गाते हो? पा लि-ाा .. -ेा आपका गीत है -ाा कोई-कोई का है, कोई का नहीं है? सभी का है? कोई का दूसरा गीत हो तो बोलो। क-ोंकि एक के हैं तो गीत भी एक ही है। और अब नहीं पा-ाा तो कब पा-ेंगे? तो अपने को सदा पद्मापद्म भाग्-ावान समझो। पद्म भी आपके आगे कुछ नहीं हैं। इतना नशा है ना? कितने भी साधन प्राप्त करने वाली आत्मा-ें हैं लेकिन जितने ही विनाशी प्राप्ति वाले हैं उतने ही अविनाशी प्राप्ति के भिखारी हैं। -ाह अनुभव है ना? जितने ज्-ाादा साधन होंगे उतनी शान्ति की नींद भी नहीं होगी। और आपकी जीवन कितनी शान्त है! कोई अशान्ति है? कभी तन वा मन की अशान्ति तो नहीं है? एवरहेल्दी है ना? माइन्ड भी हेल्दी तो हेल्थ भी हेल्दी। दोनों है ना? दुनि-ाा के आगे चैलेन्ज करने वाले हो। अगर एवरहेल्दी देखना हो तो किसको देखें? आपको! हरेक कहता है मेरे को देखें -ाा जानकी दादी को देखें–ऐसे तो नहीं कहते? आप ही हो ना? क-ों, बाप के खज़ानों के मालिक हो तो जो मालिक होता है वो सदा भरपूर, सम्पन्न होता है। तो ऐसे कम्पलीट हो -ाा कम्पलेन और कम्पलीट–दोनों ही चलता है। तो -ाही सदा स्मृति में रखो कि अधिकारी हैं और अनेक जन्म

अधिकारी रहेंगे। गैरन्टी है ना? -ाह सुख-शान्ति-पवित्रता का अधिकार जन्म-जन्म रहेगा। तो फ़लक से कहो एक जन्म तो क-ाा, अनेक जन्म के अधिकारी हैं। अच्छा!

ग्रुप नं. ५

सहज-ोग का आधार-संबंध और प्राप्ति

सभी अपने को सहज -ोगी आत्मा-ें अनुभव करते हो? सहज -ोग का आधार क-ाा है? विशेष दो बातें हैं। कौन-सी? सहज का आधार है - स्नेह, लेकिन स्नेह का आधार सम्बन्ध है। सम्बन्ध से -ाद करना सहज होता है और सम्बन्ध से प-ाार पैदा होता है। और दूसरी बात है प्राप्ति-ाँ। जहाँ प्राप्ति होगी, चाहे अल्पकाल की भी प्राप्ति हो तो मन और बुद्धि वहाँ सहज ही चली जा-ेगी। तो मुख-ा दो बातें हैं—सम्बन्ध और प्राप्ति। अनुभव है ना? वैसे भी देखो, 'बाबा' कहकर -ाद करो और 'मेरा बाबा' कहकर -ाद करो, तो फ़र्क पड़ता है? 'मेरा' कहने से सहज होता है ना। क-ोंकि जहाँ मेरापन होता है वहाँ अधिकार होता है। और अधिकार होने के कारण अधिकारी को प्राप्ति ज़रूर होती है। तो सर्व सम्बन्ध है ना कि एक-दो नहीं हैं, बाकी सब हैं? और प्राप्ति-ां कितनी हैं? सब हैं ना। जब देने वाला दे रहा है तो लेने में क-ाा हर्जा है? (कौन-सी प्राप्ति-ां?) जो बाप ने शक्ति-ों का, ज्ञान का, गुणों का खज़ाना दि-ाा, सुख-शान्ति, आनन्द, प्रेम, सब खज़ाने दि-े। तो कितनी प्राप्ति-ां हैं! क-ोंकि बाप के पास -े खज़ाने हैं ही बच्चों के लि-े। तो बच्चे नहीं लेंगे तो कौन लेंगे? तो बच्चे हैं -ाा नहीं हैं—-ाह भी सोच रहे हो? फिर अधिकार लेने में क-ों कमी करते हो? अगर अभी अधिकार नहीं लि-ाा तो कब लेंगे? जो भी भिन्न-भिन्न प्राप्ति-ां हैं, उन प्राप्ति-ों को सामने रखो। प्राप्ति को इमर्ज करने से प्राप्ति की खुशी की अनुभूति होगी। सिर्फ बाप मेरा है, नहीं, लेकिन बाप के साथ वर्सा भी मेरा है। बच्चे को प्रापर्टी की खुशी होती है ना। तो -ाह बेहद की प्रापर्टी है। बालक सो मालिक हूँ—इस खुशी में सदा रहो। कोटों में कोई और कोई में भी कोई जो गा-ान है वह किसका है? आप कोटों में कोई हो ना? बापदादा सभी बच्चों को इतना श्रेष्ठ आत्मा के रूप में देखते हैं।

दुनि-ाा भटक रही है और आप मौज मना रहे हो। मौज में रहते हो ना कि अभी भी -ाहाँ वहाँ भटकते हो? ठिकाना मिल ग-ाा ना? तो दिन-रात खुशी में नाचते रहो, खुशी में सो जाओ। अगर जीवन है तो ब्राह्मण जीवन है। तो स्व-ां के महत्व को सदा स्मृति में रखो। क-ाा थे और क-ाा बन ग-ो! श्रेष्ठ बन ग-ो ना। अपने इस श्रेष्ठ भाग-ा को कर्म करते हुए भी स्मृति में रखो। वाह मेरा श्रेष्ठ भाग-ा! दिल में -ाह आता है? इसलि-ो अपना बर्थ डे मनाने आ-ो हो ना! अपना भी बर्थ डे मनाने आ-ो -ाा सिर्फ बाप का मनाने आ-ो हो? -ो दिव्-ा जन्म कितना न्-ाारा भी है और प्-ाारा भी है! क-ोंकि बाप के प्-ारे बने हो ना। जो भगवान् के प्-ारे हैं उसके जीवन में प्-ार हर सम-ा है। तो दिल से -ाही गीत गाते रहो–वाह बाबा वाह और वाह मेरा भाग-ा वाह! अच्छा!

बापदादा ने सभी बच्चों से मिलन मनाने के पश्चात स्टेज पर खड़े होकर झण्डा लहरा-ाा तथा ५८वीं त्रिमूर्ति शिव ज-ान्ती की बधाई दी:-

आज के इस विशेष शिव ज-ान्ती के दिवस पर चारों ओर के बच्चों को हीरे तुल्-ा ज-ान्ती की हीरे तुल्-ा जीवन वाली आत्माओं को पद्मगुणा मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

प्-ोरिटी की रा-ॅल्टी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। जैसे कोई रॉ-ाल फैमिली का बच्चा होगा तो उसके चेहरे से चलन से मालूम पड़ता है कि -ाह कोई रा-ॅल कुल का है। ऐसे ब्राह्मण जीवन की परख -ाह प्-ोरिटी की झलक से ही होती है। और चेहरे वा चलन से प्-ोरिटी की झलक तब दिखाई देगी जब सदा संकल्प में भी प्-ोरिटी हो। संकल्प में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो।